प्रकाशनार्थ

गोरखपुर 10 दिसम्बर। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के 85वें संस्थापक सप्ताह–समारोह के मुख्य महोत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह के **मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह जी, माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री, भारत सरकार** ने कहा कि यह देश का सौभाग्य है कि महन्त योगी आदित्यनाथ जी इस देश के सबसे बड़े प्रदेश के मुख्यमंत्री है। भारतीय संस्कृति का यह कथन की राजा दाशर्निक अथवा दाशर्निक राजा होना चाहिए, महन्त योगी आदित्यनाथ जी के मुख्यमंत्री होने से पूर्णतः चरितार्थ होता है। भारत के प्रधानमंत्री मा0 नरेन्द्र मोदी जी का उत्तर प्रदेश आभारी है कि उन्होनें उत्तर प्रदेश का नेतृत्व महन्त योगी आदित्यनाथ जी के हाथो सौंपा। श्रीगोरक्षपीठ का कोई महन्त उत्तर प्रदेश की बागडोर सम्भालेगा यह कोई सोचा भी नही था।

उन्होनें आगे कहा कि महाराणा प्रताप के नाम पर यह के शिक्षा परिषद् का नाम रखा जाना यह बताता है कि देशभक्त नागरिक और संस्कृति के रक्षण के लिए इस पीठ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना की। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा चलाये जा रहे शैक्षणिक, सामाजिक और स्वास्थ्य सम्बन्धित लोककल्याण कार्यक्रम न केवल अनुकरणीय है बल्कि वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण भी है। शिक्षा और संस्कार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का मूल आधार होना ही चाहिए। शिक्षा का रोजगार के साथ सम्बन्ध होना चाहिए परन्तु शिक्षालयों को ज्ञान के प्रसार के साथ ही साथ मनुष्य निर्माण के केन्द्र के रूप में कार्य करना चाहिए। छात्रों को मनुष्य के रूप में तैयार करने में माता–पिता तथा गुरू की अत्यन्त ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा परिषद् की संस्थाएं मनुष्य निर्माण की अपनी भूमिका का कुशलता पूर्वक निर्वहन कर समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करने का कार्य कर रहीं है। शिक्षा परिषद् द्वारा मेधावी छात्र–छात्राओं को प्रदान किये जाने वाले पारितोषिक वितरण समारोह को सम्बोधित करते हुए । उन्होनें कहा कि भारत ऋषि–मुनियों को देश का रहा है तथा मठ और मन्दिर शिक्षा और स्वास्थ्य के केन्द्र के रूप में लोक कल्याणरत रहे है। श्रीगोरखनाथ मन्दिर इसी परम्परा का आज भी सशक्त वाहक है, जहां गुणवत्ता युक्त शिक्षा और सुलभ चिकित्सा एक आध्यात्मिक कार्य है। गोरखपुर की पहचान नाथ पंथ के प्रधान वैश्विक केन्द्र और लोक कल्याण के पर्याय श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर से है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा आयोजित सारस्वत समारोह पूर्वी उत्तर प्रदेश की साढ़े छः सौ प्रतिभाओं को सम्मानित करने का अद्वितीय अनुष्ठान है। यह कार्यक्रम छात्रों की भावी पीढ़ी को दिशा देने, उन्हे प्रोत्साहित करने और उनमें अनुशासन तथा राष्ट्रभक्ति का भाव जाग्रत करने में मील का पत्थर साबित होगा। विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुये उन्होने कहा कि पुरस्कार सम्मान तो है लेकिन मंजिल नही। यह लक्ष्य तक पहुॅचने का सशक्त प्रोत्साहन है। उन्होने छात्र–छात्राओं को बताया कि मानव जीव लाभ–हानि तक ही सीमित नही है, अतः वे जीवन का सदुपयोग परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व और ब्रह्माण्ड के कल्याण हेतु करें।

उ.प्र. के यशस्वी मुख्यमंत्री, परम पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है, इसमें कोई भी अयोग्य नही है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शिक्षकों को इसी ईश्वर प्रदत्त कार्य करके देश की भावी पीढ़ी को लोक कल्याण हेतु कार्य करने वाले राष्ट्रवादी छात्रों का सृजन करना है। आजादी के बाद देश ने राष्ट्रीयता की भावना और जीवन में

अनुशासन को खोया है। जबकि हिन्दू धर्म की विद्या 'योग' आत्मानुशासन पर ही टिकी है। लोकतन्त्र, लूट तन्त्र एवं उच्च श्रृखंलता का पर्याय बन चुका है। ऐसे वातावरण में श्रीगोरक्षपीठ और उसके द्वारा संचालित संस्था महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा एक सप्ताह तक अकादमिक कार्यक्रम आयोजित करके गोरखपुर के पचास हजार से अधिक छात्र–छात्राओं को भागीदार बनाना महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापको को श्रद्धा अर्पित करने तथा युवा पीढ़ी को राष्ट्रवाद की मुख्यधारा में जोड़ने का अद्भुत एवं बेमिसाल अभियान है। बड़े ही भावपूर्ण ढंग से योगी जी ने कहा कि कोई भी अक्षर ऐसा नही है। जो मन्त्र नही बन सकता। आवश्यकता है उसको एक सूत्र में पिरोने वाले विद्वानो की, आगे उन्होने कहा कि कोई वनस्पति ऐसी नही है जिसमे औषधीय गुण नही, आवश्यकता है एक योग्य वैद्य की।

उन्होनें आगे कहा कि पूज्य गुरुदेव महन्त दिग्विजयनाथ जी एक सन्त थे। सन्त जीवन का लक्ष्य मोक्ष होता है किन्तु वे राष्ट्र एवं समाज के लिए समर्पित हुए और सेवा–साधना से राजनीति तक के सभी क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति के लिए, मातृभूमि के लिए और हिन्दू समाज की एकता के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् उनके शिक्षा क्षेत्र में किये गये अवदानों का स्पष्ट प्रमाण है। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में गोरक्षपीठ की अहर्निश साधना का रथ बढ़ता रहेगा। प्रदेश में शैक्षिक क्रान्ति और संस्कारयुक्त शिक्षा के पुनर्जागरण का शिक्षा परिषद् वटवृक्ष है। प्रतिवर्ष संस्थापक समारोह के माध्यम से गोरक्षपीठ शिक्षा के क्षेत्र में अपने कर्तव्य और संकल्प के प्रति वचनवद्ध होती है।

इस अवसर पर माननीय मुख्य अतिथि डॉ0 सत्यपाल सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती अल्का सिंह जी के हाथो से भी अनेक छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं पूर्व कुलपति प्रो0 उदय प्रताप सिंह जी ने किया। आभार ज्ञापन डॉ0 शैलेन्द्र प्रताप सिंह तथा संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह ने किया।

इस कार्यक्रम में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सम्मानीय सदस्य एवं वरिष्ठ अधिवक्ता **श्री प्यारे मोहन सरकार का अपने जीवन के 101 वर्ष पूरे होने पर पूज्य महाराज जी द्वारा उन्हे स्मृति चिन्ह्न एवं उत्तरीय** प्रदान कर सम्मानित किया गया। प्राचार्य डॉ0 प्रदीप राव एवं डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा सम्पादित एवं श्री राजेश दूबे द्वारा प्रकाशित पुस्तक **''भारतीय राष्ट्रीयता एवं सन्त परम्परा''** तथा डॉ0 प्रदीप राव एवं डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह द्वारा सम्पादित पुस्तक **''गोरक्षपीठ : योग और शिक्षा''** का भी लोकार्पण उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज तथा मुख्य अतिथि डॉ0 सत्यपाल सिंह ने किया।

संस्थापक समारोह में आज मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं मुख्यमंत्री, परम पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने साढ़े छः सौ से अधिक छात्र–छात्राओं को नकद पुरस्कार, प्रमाणपत्र एवं सील्ड प्रदान किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की सभी संस्थाओं के सभी कक्षाओं में प्रथम–द्वितीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति एवं मण्डल, राज्य, राष्ट्र एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न खेलों में परचम फहराने वाले महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अर्न्तगत शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं को नगद पुरस्कार दिया गया है। साथ ही संस्थापक समारोह में सप्ताह भर आयोजित प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों–टीमों को गौरव–पत्र, नकद पुरस्कार एवं सील्ड प्रदान किये गये।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक समारोह में श्रेष्ठतम संस्था का गुरू श्री गोरक्षनाथ स्वर्ण पदक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ महाविद्यालय चौक बाजार, महराजगंज को, श्रेष्ठतम शिक्षक का योगिराज बाबा गम्भीर नाथ स्वर्ण पदक दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर के डॉ. राजशरण शाही, स्नातकोत्तर कक्षाओं में श्रेष्ठतम विद्यार्थी का ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्वर्ण पदक दिग्विजयनाथ एल.टी.प्रशिक्षण महाविद्यालय गोरखपुर की एम.एड्.प्रथम वर्ष की छात्रा ज्योति सिंह को, स्नातक कक्षाओं में श्रेष्ठतम विद्यार्थी का ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ स्वर्ण पदक महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़ गोरखपुर के बी.ए.तृतीय वर्ष के छात्र राहुल गिरि, माध्यमिक वर्ग के श्रेष्ठतम विद्यार्थी का महाराणा मेवाड़ स्वर्ण पदक महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, गोरखपुर कक्षा 11 के छात्र राहुल कान्दू को दिया गया। शोभा यात्रा में श्रेष्ठ अनुशासन एवं पथ संचलन के पुरस्कारों की भी घोषणा कर दी गयी। शोभा यात्रा का प्रथम पुरस्कार महाराणा प्रताप कन्या इण्टर कालेज रामदत्तपुर,गोरखपुर द्वितीय पुरस्कार गुरू श्रीगोरक्षनाथ विद्यापीठ भरोहिया पीपीगंज, गोरखपुर एवं तृतीय पुरस्कार गुरू श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोरखनाथ, तथा प्रोत्साहन पुरस्कार महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज सिविल लाइन्स, गोरखपुर, राज नर्सिग एवं पैरामेडिकल कालेज, गोरखपुर को प्रदान किया गया। अन्य प्रमुख 10 पुरस्कारों की भी घोषणा कर दी गयी। महाराणा भगवत सिंह स्मृति पुरस्कार काजल राव, स्व. चौधरी विनोद कुमार स्मृति पुरस्कार राजकुमार वर्मा, डॉ. हरिप्रसाद शाही स्मृति पुरस्कार प्रियंका जायसवाल, लक्ष्मीशंकर वर्मा स्मृति पुरस्कार सोनाली कुमारी, स्व. चण्डी प्रसाद सिंह स्मृति छात्रवृत्ति संगम कुमार कन्नौजिया, स्व. राम नरेश स्मृति पुरस्कार सुनन्दा सागर, सुशीला देवी स्मृति पुरस्कार रत्नांजलि सत्संगी, मॉ गंगदेई देवी स्मृति पुरस्कार प्रीति शुक्ला , चौधरी रामलखन स्मृति पुरस्कार दृष्टि जायसवाल, चौधरी कृष्णा स्मृति पुरस्कार अभिनव त्रिपाठी, पं.बब्बन मिश्र स्मृति पुरस्कार संस्थापक समारोह में होने वाले प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर राहुल कान्दू को बारह हजार रूपये का नगद पुरस्कार दिया जायेगा।

इस अवसर पर दिगम्बर अखाड़ा अयोध्या के महन्त सुरेशदास जी महाराज, महन्त बालकनाथ जी, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कुलपति प्रोफेसर वी.के.सिंह जी, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री प्यारे मोहन सरकार, श्री धर्मेन्द्रनाथ वर्मा, प्रो0 शिवाजी सिंह मंच पर उपस्थित थे। समारोह में श्री धर्मेन्द्र सिंह, डॉ. टी.पी.शाही, श्री प्रमथनाथ मिश्रा, श्री कुशलनाथ मिश्रा, श्री गोरख प्रताप सिंह, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, प्रो0 विनोद सिंह, प्रो0 रविशंकर सिंह, डॉ0 राजकिशोर सिंह, डॉ0 दिनेश सिंह, मेयर श्री सीताराम जायसवाल, पूर्व मेयर श्रीमती सत्या पाण्डेय, डॉ. वाई.डी. सिंह, श्री पी.के. मल्ल, श्री अरूणेश शाही, विधायकगण डॉ. राधा मोहन दास अग्रवाल, श्री शीतल पाण्डेय, श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री श्यामधनी राही, महेन्द्र पाल सिंह व श्री बृजेश यादव, श्री बलवीर सिंह, श्री रामरक्षा पाण्डेय, श्री उपेन्द्र दत्त शुक्ला, डॉ. धर्मेन्द्र सिंह, श्री कामेश्वर सिंह, डॉ0 महेन्द्र अग्रवाल, श्री सुरेन्द्र अग्रवाल, श्री अशोक जालान, श्री शिवजी सिंह, श्री राम जन्म सिंह, डॉ. मारकण्डेय सिंह सहित बड़ी संख्या में महानगर के प्रबुद्धजन, व्यावसायी, चिकित्सक, अधिवक्ता एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सभी संस्थाओं के शिक्षक–कर्मचारी एवं प्रमुख प्रतिभागी उपस्थित थे।

डॉ. राजेश शुक्ला
मीडिया प्रभारी